हिन्दी का भूमंडलीकरण और संचार माध्यम

सिकदार आनवारुल इसलाम
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
खारुपेटीया महाविद्यालय

भाषा किसी देश की अस्मिता की द्योतक होती है। किसी देश और राष्ट्र के स्वरूप तथा स्वाभिमान को अभिव्यक्ति देने का नाम भाषा है। भाषा देश के इतिहास का वह आइना होती है, जिसमें भविष्य भी देखा जा सकता है। हिन्दी भारतवर्ष का स्वाभिमान है; भारतवर्ष की राजभाषा,राष्ट्रभाषा एवं अन्यतम सम्पर्क भाषा हिन्दी है।संपर्क भाषा का अर्थ है जिसे अधिकांश लोग समझ सकें तथा जनसंचार के माध्यम जिस भाषा का देशव्यापी प्रयोग करते हों। इस ओर ध्यान दें तो हम पाएँगे कि हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सबसे बड़ा योगदान संचार माध्यमों का विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का रहा है। जहाँ राजनैतिक मंत्र और सरकारी तंत्र फेल हो गए वहीं इन माध्यमों ने हिन्दी को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की,खासकर अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में।वैश्विक दौर में आज हिन्दी ने गाँव की कच्ची व सँकरी गलियों से निकलकर शहर की लंबी - चौड़ी सड़कों को पार कर हवाई पट्टी पर तेज रफ्तार से दौड़ती हुई अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत की है। हिन्दी की इस व्यापक प्रचार-प्रसार में, हिन्दी को वैश्विक रूप प्रदान करने में मुख्य भूमिका निभायी विभिन्न संचार माध्यमों ने।

२१ वीं सदी में संचार माध्यमों की द्रुत उन्नति से विश्व एक "ग्लोबल विलेज" बन गया है। संचार माध्यमों ने मानव जीवन के हर पहलू पर प्रभाव विस्तार किया है। मानव के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन के साथ संचार माध्यमों का जो जुड़ाव है, उसमें भाषा की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है।विश्व में हिन्दी का प्रयोग करनेवालों की स्थिति अवलोकन किया जाए तो १९५२ में हिंन्दी विश्व में पाँचवें स्थान पर थी। १९८० के आस पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई । १९९१ की जनगणना में हिंन्दी को मातृभाषा घोषित करनेवालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि यह पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से अधिक है। इतना ही नहीं डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल ने निरंतर २० वर्ष तक भारत और विश्व में भाषाओं संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण करके सिद्ध किया है कि विश्व में हिंन्दी प्रयोग करनेवालों की संख्या चीनी से भी अधिक है और हिंन्दी अब प्रथम स्थान पर है। हिन्दी की इस भूमंडलीकरण में प्रमुख संचार माध्यम जैसे - पत्रकारिता और समाचार एजेंसिया, रेडियो प्रसारण, सिनेमा, दूरदर्शन, कंप्यूटर आदि की मूख्य भूमिका रही है, जिन पर यहाँ संक्षेप में चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार, विकास एवं परिमार्जन में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक दो युग-भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग पूर्णरूपेण पत्रकारिता पर ही निर्भर रहे। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी पत्रकारिता ने विज्ञान, वाणिज्य,अर्थतंत्र,प्रौद्योगिकी , प्रशासन आदि अनछूए क्षेत्रों में पदार्पण किया जिसके चलते हिन्दी भाषा में नई शब्दावली एवं अभिव्यक्तियों का विकास हुआ। हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से विज्ञापन की हिन्दी, खेलकूद की हिन्दी, बाजारभाव की हिन्दी आदि प्रयुक्तियों का विकास हुआ है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रयुक्त भाषा एक ओर साहित्य तो दूसरी ओर जनसामान्य के अंतस्थल को स्पर्श करती है।

स्वाधीनता के पश्चात हिन्दी पत्रकारिता में महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय उन्नति हुई है। आज भारत के कोने-कोने में हिन्दी पत्रकारिता का बोलवाला है। भारत सरकार के पत्र-पत्रिका पंजीयक की रिपोर्ट के अनुसार भारत में समाचार पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं की संख्या सर्वाधिक है। हिन्दी की लगभग संपूर्ण जानकारी प्रदान करने में भारत सरकार का विदेश मंत्रालय,दैनिक जागरण,अभिव्यक्ति व अनुभूति नामक वेब-पत्रिकाओं के साथ-साथ पुस्तक-संग्रह, साहित्य कुंज,अन्यथा, कलापन पत्रिका,भारत दर्शन,साहित्य वैभव, सृजनगाथा आदि पत्रिकाएँ हिन्दी साहित्य एवं भाषा की विपुल जानकारी तथा शोध के काम में महत्वपूर्ण भूमिका

निभा रही है।रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स के अनुसार देश में कुल १७८३६ पत्र-पत्रिकाँए निकलती है, जिनमें दैनिक -२२०२, साप्ताहिक-९०६२,द्वि/त्रि साप्ताहिक-१२५, पाक्षिक-२७४१,मासिक-२९६०,त्रैमासिक-५४४,अर्द्धवार्षिक-१७३ तथा वार्षिक २९ पत्र-पत्रिकाएँ शामिल हैं।

विदेशों से भी लगभग २५ से अधिक हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित की जा रही हैं। जिन्हें बड़े चाव से न केवल पढ़ा जाता है बल्कि उनको अधिक विस्तृत करने के लिए समय भी दिया जाता है। आज माँरिशस से वसंत,रिमझिम,पंकज,आक्रोश, इंद्रधनुस आदि हिन्दी में प्रकाशित होते हैं, फिजी से शांतिदूत,नेपाल से विविध भारत, श्रीलंका से बालभारती,चंदा मामा, सरिता,अमेरिका से हिन्दी जगत, यू.के. से प्रवासी टाइम्स,भारत भवन,नॉर्वे से शांतिदूत, बाल्गारिया से मैत्री पत्रिका, लंदन से प्रवासिनी, अमरदीप तथा भारत भवन आदि पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इन पत्र-पत्रिकाओं द्वारा हिन्दी प्रचार-प्रसार दुनिया भर में तेजी से हो रहा है।

अमेरिका जैसे उन्नत देश ने भी हिंन्दी भाषा की किसी-न-किसी प्रकार से पुरजोर वकालत की है। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिंन्दी, फारसी,अरबी,चीनी व रुसी भाषाएँ सीखने को कहा था। राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि 'हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे २१ वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए।'

सन् १९८० और १९९० के दशक में भारत में उदारीकरण,वैश्वीकरण और औद्योगीकरण की प्रभाव से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का भारत-आगमन लाजिमी था, क्योंकि वे भी वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण के इस युग में अपना मुनाफा बढ़ाना चाहती थीं। इन कंपनियों का भारत में पदार्पण हुआ तो हिंन्दी के लिए एक खतरा दिखाई दिया था, क्योंकि वे अपने साथ अंग्रेजी लेकर आई थीं। इसके साथ भारत में आये स्टार चैनल,सोनी टी.बी. जी.टी.बी स्टार प्लस आदि अनेक टी.बी चैनल आए, जिन पर अंग्रेजी की भरमार थी। लेकिन इन सबको विवश होकर हिंन्दी की ओर मुड़ना पड़ा, क्योकि इन्हें अपनी दर्शक संख्या बढ़ानी थी, अपना व्यापार, अपना लाभ बढ़ाना था। इसलिए उन्होंने हिंन्दी को अर्थ और विकास की सीढ़ी मानकर उस पर सवार होकर अपना उत्पादन बाजार में उतारा। पेप्सी हो या पिज्जा, नूडल्स हो या बर्गर,तेल-क्रीम हो या मोटर साइकिल, हर वस्तु की विक्री आज हिन्दी के माध्यम से हो रही है। टी. वी चैनलों एवं मनोरंजन की दुनिया में हिंन्दी सबसे अधिक लाभ की भाषा है, कुल विज्ञापनों की लगभग ७५ प्रतिशत की भाषा हिन्दी है। दूरदर्शन के विकास ने ही हिन्दी की वीडियो पत्रकारिता को भी लोकप्रिय बनाया है। पौराणिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय भाषाओं की शब्द-सम्पदा को दूरदर्शन ने दर्शकों तक पहुँचाया है, जिससे हिन्दी के शब्द संसार का भी विकास हुआ है।

रेडियो का हिन्दी प्रसारण हिन्दी श्रोताओं में हमेशा लोकप्रिय रहा है। दूरदर्शन ने रेडियो प्रसारणों की व्यापकता को अवश्य ही सीमित किया है, फिर भी इस चुनौती को रेडियो ने स्वीकार करके अपने हिन्दी कार्यक्रमों के स्तर को बेहतर बनाया है। ग्रामीण भारत और हिन्दीतर प्रदेशों में रेडियो ने हिन्दी भाषा के विकास में जो भूमिका निभाई है उसका स्वतंत्र मूल्यांकन अपेक्षित है। हिन्दी की वाणी को रेडियो ने जन-जन के कानों तक पहुँचाया है। अधिकांश फिल्मी गीतों को रेडियो ने ही लोकप्रिय बनाया।

बी.बी.सी. हिन्दी सेवा का जन्म सन् १९४० में हुआ। उस समय इसका नाम था-'हिन्दुस्तानी सर्विस' और इसके संचालक जेड.ए. बुखारी थे, इसकी हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बी बी सी हिन्दी सेवा ने विदेश में तो हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ाया ही, भारत के प्रत्येक हिस्से में, चाहे वह शहरी क्षेत्र हो या ग्रामीण परिवेश, प्रत्येक जगह अपनी भाषा की स्पष्टता,बोली में मिठास व लचीलेपन के कारण हिन्दी के परिनिष्ठित रूप से सबको अवगत कराया है। हिन्दी के उच्चारण स्तर को ठीक करने में रेडियो प्रसारण की खास भूमिका रही है। रेडियो के प्रसारणों की लोकप्रियता आज भी अक्षुण्ण है।

सिनेमा ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा कार्य किया है। सिनेमा ने हिन्दी को हर छोटे-बड़े कस्बे तक पहुँचाया है। फिल्मों के श्रेय है कि उसने अनेक श्रेष्ठ हिन्दी रचनाओं को पर्दे पर प्रदर्शित कर लोकप्रिय बनाया है। आज सभी चैनल तथा फिल्प निर्माता अंग्रेजी कार्यक्रमों और फिल्मों को हिन्दी में डब करके प्रस्तुत करने में लगे हैं। जुरासिक पार्क जैसे अति प्रसिद्ध फिल्म के हिन्दी संस्करण ने भारत में इतना पैसे कमाया, जितना अंग्रेजी संस्करण ने पूरे विश्व में नहीं कमाया। "स्लमडॉग मिलियनेयर" को भी हिन्दी में डब किया गया है, जिसने मुनाफे और अवार्ड के सारे रिकार्ड ही तोड़ दिए।

हिन्दी के विकाश में, इसके भूमंडलीकरण में पत्र-पत्रिकाएँ,दूरदर्शन,हिन्दी फिल्म,हिन्दी गानों के साथ-साथ यदि कंप्यूटर और मोबाइल की संचार क्रांति की चर्चा न की जाय तो बात अधूरी रह जाएगी। ये ऐसे माध्यम हैं, जिन्होंने दुनिया को सचमुच मनुष्य की मुट्ठी में करदिया है। सूचना, समाचार और संवाद प्रेषण के लिए ये हिन्दी को विकल्प के रूप में विकसित करके इंटरनेट पर आये हैं। कंम्पूटर पर हिन्दी की सामग्री उपलब्ध कराने में राह आसान की है"युनिकोड" ने। यूनिकोड को एक प्रकार से तकनीकी भूमंडलीकरण का ही प्रतीक कह सकते हैं। हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार में "युनिकोड की सुविधा क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आई है।"युनिकोड के महत्व को समझकर भारत सरकार के कुछ विभाग हिन्दी के समाचार-पत्र और कुछ हिन्दी पोर्टलों ने अपनी वेबसाइट के लिए "युनिकोड का प्रयोग शुरू कर दिया है। "युनिकोड के जरिए आज हिन्दी में सजाल(websites),चिट्ठे (Blogs), विपत्र(Email),सरल मोबाइल संदेश(SMS) तथा अन्य हिन्दी सामग्री उपलब्ध है। कम्पूटर के प्रादुर्भाव और रेडियो के इंटरनेट पर जाने के बाद तो वैश्वीकरण की जरूरत को हर क्षेत्र में महसूस किया जाने लगा है और भाषा इससे अछूती नहीं।

कंप्यूटर के साथ-साथ अब मोबाइल उद्योग भी हिन्दी सेवा को बड़ी प्राथमिकता देते हुए बाजार में उतर गया है। विश्व की ९० प्रतिशत जनसंख्या अब मोबाइल नेटवर्क से जुड़ गई है। भारत में इस सेवा के विस्तार के पीछे कारण है हिन्दी का विस्तार और उसकी बढ़ती माँग। ज्यादातर कम्पनियाँ ग्राहकों को हिन्दी सुविधाएँ उपलब्द करा रही हैं, क्योंकि भारत की सिर्फ सात प्रतिशत जनसंख्या अंग्रेजी बोलती है, बाकी आबादी हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ बोलती हैं। नोकिया कंमनी ने भारतीय ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए अपने मोबाइल उपकरणों (मॉडल ११००,११०८,१११०,११६०,२३१०,६०३० आदि) में देवनागरी लिपि का प्रयोग एस.एम.एस के लिए उपलब्ध कराया है। ये हैंडसेट हिन्दी में संदेश भेजने और पाने में सक्षम है।

C-DAC पुणे ने लीला प्रबोध कोर्स अब मोबाइल हैंडसेट पर उपलब्ध कराया है । कृत्रिम बुद्धि तकनीक पर आधारित लीला सॉफ्टवेयर अब कंप्यूटर के साथ-साथ मोबाइल पर उपलब्ध है। अब ध्वनि और चित्र के साथ हिन्दी सीखना आसान और सुविधाजनक हो गया है। इस सुविधा को उपलब्ध कराने और आम जनता के बीच पहुँचाने का काम किया है मल्टी मीडिया कार्ड (MMC) ने । इस मोबाइल पैकेज की सहायता से देवनागरी अक्षरों की पहचान,पढ़ना, सुनना, हिन्दी शब्दों का उच्चारण, व्याकरण,वीडियो क्लिफ,हिन्दी अनुवाद,हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश आदि सुविधायएँ मोबाइल धारकों को मैत्रीपूर्ण शैली में प्राप्त हैं।

वेबसाइट वेबदुनिया के संपादक जयदीप कार्णिक कहते हैं-"मोबाइल फोन पर आप फीचर्स पढ़ सकते हैं। फिल्मों की समीक्षाएँ, सितारों के इंटरव्यू वगैरंह पढ़ सकते हैं।" इसके बारे में वे कहते हैं-" हिन्दी की बहुत सारी वेबसाइट्स हैं, जिनके माध्यम से हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। हिन्दी रोजगार से जुड़ रही है। पहले माना जाता था कि-अगर आपकी शिक्षा हिन्दी में हुई तो आपको रोजगार में समस्या होगी। यह भ्रम जरूर टूटा है।"

हिन्दी का यह मिथ अब टूट गया है कि - ' हिन्दी गरीब की भाषा; गरीबी की भाषा है। बल्कि हिन्दी तो भारत जैसे विकासशील देश की भाषा है। आज हिन्दी में वह सामर्थ्य विद्यमान हैं जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकते हैं। इसके अलावा विश्व के ३७ देशों के १०१ विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा और साहित्य पढ़ाया

जाता है। ' द वर्ल्ड अलमैनेक एंड बुक ऑफ फैक्ट्स' पुस्तक में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या स्पष्ट करते हुए लिखा है- बँगलादेश ३०, पाकिस्तान८७, भूटान ३०, फीजी ५०, नेपाल ९०, मॉरीशस ६९,पेरु १५, सूरीनाम ३७ एवं अरब में ५० प्रतिशत है। यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन ने भी एक आँकड़ा प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार हिन्दी को पहले स्थान पर, चीनी को दूसरे स्थान पर और अंग्रेजी को तीसरे स्थान पर रखा गया है। कुल मिलाकर हिन्दी भाषा के विकास के लिए जन-संघर्ष जारी है। हिन्दी राजभाषा से आगे बढेगा, उसकी जय यात्रा को कोई रोक नही सकता। अतः हिन्दी पहले स्थानीय (घरेलू) रूप में पल्लवित एवं विकसित होती हुई आज वह राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमाने में कामयाब हुई है। इतनी ही नहीं अब वह संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। हिन्दी को पल्लवित, विकसित तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रदान करने में सभी संचार माध्योमों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की है तो उसे विस्तृत किया है हिन्दी गानों ने, हिन्दी फिल्मों ने, विज्ञापनों ने, बाजार ने, कंप्यूटर ने ,मोबाइल सेवा ने।

आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव से अन्य चीजों की तरह मीडिया की भाषा में भी बदलाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इससे जहाँ एक ओर हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है, वही उसके स्वरूप में कुछ परिवर्तन आया है। हिन्दी प्रेमी यदि वास्तव में हिन्दी को फलते-फूलते देखना चाहते हैं तो उन्हें बोलचाल में एक सीमा तक दूसरी भाषा के शब्दों के प्रयोग से एतराज नहीं होना चाहिए। कई सामान्य रूप से प्रचलित शब्दों जैसे--दाल-फ्राई,एडजस्ट,बोर,टाइमपास,स्टेशन, केटली आदि के हिन्दी पर्याय ढूंढकर उन्हें मुश्किल बनाने की कतई जरूरत नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं है कि हिन्दी के साथ खिलवाड़ करके उसे तोड़-मरोड़ कर एक नई भाषा का निर्माण कर लिया जाए। इस भूमंडलीकरण के युग में हिन्दी को अगर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का माध्यम बनाना है तो उसके मानकीकरण की जरूरत अवश्य होगी। परंतु इस सारी प्रक्रिया को आम प्रचलित शब्दावली को ध्यान में रखकर सरल किया जा सकता है। इससे न सिर्फ हर विषय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ेगा बल्कि हर क्षेत्र में इसका प्रसार भी होगा।

सिकदार आनवारुल इसताम
सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय, दरंग।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी भाषा के विकाश में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान-- डॉ. अताउल्लाह खान
2. दीपशिखा-२०००, इग्नो, नई दिल्ली।
3. अनुवाद भारती-२००४., स्मारिका, गुवाहाटी।
4. साहित्य अमृत, मासिक पत्रिका, नयी दिल्ली, सितम्बर २०१०.
5. भारतीय भाषाए और इंटरनेट- अखिलेश शर्मा
6. आयुष्मान-स्वास्थ्य, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पत्रिका, दिल्ली।
7. भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी- कृष्ण कुमार यादव, साहित्य कुंज, १७ जनवरी, २००९
8. विजय प्रभाकर कांबले- मोबाइल में हिन्दी, अभिव्यक्ति पत्रिका.
9. साहित्य अमृत, मासिक पत्रिका, नयी दिल्ली, सितम्बर २०११